

अथ

Parvaty parinay

पार्वती परिणय नाम नाट्यम्

॥ पार्वती परिणय ॥

वाणेश्वर विराजितम्

109/7

109/7

2/38

✓ ✓

॥ श्रीशिवोपि जपनेतरो ॥ आदौ जेम रुवापिता हरमुख व्यापार हो नाश नै श्रीं भारि धर्मा तो मुकुति ना धूमो जमया जतः ॥ पत्तुः संविज्ञिता ॥
॥ दृशं संभस व्यावर्तन व्याकुलो पार्श्वयोः पारिणाति मंगल पिथो दृष्टिः शिवा यो सुने ॥ १ ॥ अपि च ॥ संपद मतर ह भ्या मन न्यसा मा न्य वरु ज दधे निधे ॥
॥ पुष्पा तु धित को न र धरित धट ना पटी पला पि मुता ॥ २ ॥ नो धते स्तु चारः ॥ ३ ॥ सजगाम मे जज्ञि च ॥ ४ ॥ प्रल्लप्ते वरुं वस्य को ग सेम पि धा पि ने ॥
॥ आनंद विन हो भूये भूपा ला मा रि दं वती ॥ ५ ॥ इति पुष्पा जति पि की र्क ॥ ने पथ्या मि मु पि म व तो म ॥ आवे रत ला वत् ॥ प्रवि रप न टी ॥ ॥ अ ॥
॥ जज्ञि र अलि ॥ ६ ॥ आये अपि लु म म पि न वं पार्श्व ती पारिण पं नाम रूप रं द्रु म पि ह बति पारि दं ॥ न टी ॥ अ ज्ञे जित ते र्क ॥ अस्स रु द्रो ॥
॥ अदि दृष्टि सिदि ॥ ७ ॥ अस्ति रु पि सा धो मो न सा न्य ज ह धि ले भ रो म ॥ ८ ॥ न त्यति व द स ना पो वे यो मुख ता सि धा वा ली ॥ ९ ॥ तद्वि रचिते ना पि ॥
॥ चित्र संविधाने न वस्तु ना ने न सामा जि धा तु वा स्म हे ॥ न टी ॥ अ ज्ञे जित असा र्ण ॥ १० ॥ उ व दं दे उ व हं त हिं ध त ते हो हो म हि सा सो ॥ ११ ॥ ले पि ॥
॥ आन स्य ता म न्य र सा नो पारि पु र्ण ॥ ले द र्भ सो रु मा र्क व स भ्या नो रं ज ने क्ष म ॥ १२ ॥ त त उ वा हं गु ण जा हित पा त व प्र च तः ॥ न टी ॥ ज द्दु धं ता जु ज्ञे ॥
॥ १३ ॥ न टी नि र्ब र्ण ॥ आवे पार्श्व ती पारिण व प्र सं गे वि धि नि पि ते भ व ती पि म ना प मा ने व पि हो म ते ॥ न टी ॥ अ ज्ञे जित र मि ण पारिण अ प्य सं गे ॥
॥ अ ला रं वि व त्था उ वा ह वं डि मा उ अ लु र्क व र ह्मा रु म रु द्ध ओ रुं भ पि त्स दि ति णि रं त रं चिं ता रं हो र मे हि ओ अ ॥ १४ ॥ अ हं पि धा दे न ॥
॥ वि धि रे व रु म ना म मि म त व र को ज ना र्थ मु धुं ले ॥ अ प मि रु म रु ती द पि तो मु नि र व गि रि रा ज रु न्या पा ॥ १५ ॥ इति प्रस्ता वना ॥ ततः प्रवि रा ॥
॥ त्या क्रो रा मा र्ग ए ना र द ॥ ना ॥ इत ज म नः प्र च ति न ज ह ति नून म स्मा नि प म म र भा र्थ ध ट ना रु त्ता ह ति ता ॥ व तः ॥ द क्षा र ह्मा व स मु द्ध व त द्जु तं न्य ॥
॥ त्ता प ति द्रो हि णं जा ता सं प्र ति शे र त ज स द ने गो र ति च क्षा पि णी ॥ उ नो को ज पि ते ह रे ण हि म व त्ता नो त व त्त न ता भा र्थ भा पि स मा भ ल प्य म रु ता म च ॥
॥ प्र व र्त्ता म हे ॥ १६ ॥ अं चि दं त र म व ती र्क ॥ आ लो क ॥ च ॥ पारि व ह ना म्नः प व न स्य वे धा नं प्रा त रा न स्मि ॥ त था हि ॥ आ रा दं ज ति वे प म व पि रु स न्ये र ॥
॥ पुष्पा धितं तो र म्ये प व नो प नी त म पि तो आ वं त्प मा ष ट्प द ॥ तं ची म ड हं मा र्क वे ति अ णि भा मे द जि नी वा ध ता म प्ये तः अ रं च मे सु म रु ती मा र्क व ते

॥ सरम स्वावतरणं नापि ता ॥ अघो व हो म ॥ अये मध्यम हो रु स्य ने दी यो सं प्रदेश मनु प्राप्ता स्मि ॥ पतः ॥ १ ॥ घट्टिः शिखरे र मी भूति च न म्प्ये त ए वा च ता ॥
॥ ये म ह्मा द नु मी प ते च स रि तो ह्मा त सि नी सं त तिः ॥ स्तु ये त प रि मे ड ह ने न त रो नी लो पु द्ध श्री मु खो मं दं मे द मु पे ति तो च न प प म्ना ह्यो द शो मे दि नी ॥ २ ॥ पु न र्चि तो ॥
॥ स सा भ वे ॥ गि रि व र त टि नी गु ह्ये र्श न प र्शो रु मा दु वा रु ॥ अ व रो ह ति म पि र भ ता दू रि प मा तो ह ती व ग न त ते ॥ ३ ॥ मु हूर्त मा चा द व ती र्को स्मि हि म व दु ॥
॥ प रं द म्पि ॥ अं चि दं त र म व ती र्क प रि रु म्पा व तो म च ॥ अ वे हि रौ ल र जः ॥ ४ ॥ त्सा र व न्नि च पि धा ति न भो व का रं भ्यो र्धि ह र मु व नै र व त्ते ग ता वा ॥ आ भो ग ॥
॥ व द्दि र म्प तो शु क रा व ता ते र का म ती व रु द्ध र्द रि दं त र णि ॥ ५ ॥ अ ति रि म्प ते र प ह्म व म सा धा र णे न भु व न पु रं च रे ण भू म्मा मं द र गे ध मा द न प्र च ति भ्यो म ॥
॥ त म रु धा च रे म्पः ॥ प तः ॥ वि मु व न गु ण गु ण ति त ग त्म म ह भु वा रु ति ता पि प त्स ह र्मी ॥ अ वि र त म नु शा स्ति दे व ता म्मा स रु न पि दं रु व शे ते च रु वा ले ॥
॥ त द ह्म पु ना जि न री मि त नि ष्ये द रु क्ता रे ण च म री जा ले वा ल पि ले प वि र चि ता की रु वं दो द व पि ना ले न रु त्ती री प रि म हो व हि न ग ग ना म न ले दे न शे ले व ॥
॥ गं पि ना रु द रु र्म ना ज स्तु त व लु सा च ना प प्र पि शा मि वा र दो ष चि त्स्य ॥ त था रु त्वा पु रो व तो म ॥ इ ते ते ष चि त्स्य ॥ वि पु ले रु न रु भं गो पो त पि भो ॥
॥ त मे धं सु र त र प र पा टी शे म मा नो व रुं दं ॥ म णि भ व न म हो पिः स्य मा ने द्वा वं म द व ति म म चे तो मे दि रे वि त्स पा नो ॥ १६ ॥ पु र ज ये श म पि नी वा म तो दृ षे ॥
॥ १७ ॥ द द म्भं हि गो पु र शि ख रा व ती र्क न क्ष व व थं हे म व त मा प त ने ॥ प्र ये रं ना ट व न् ॥ आ क्रो ॥ भोः रुं चु जि रु रु व र त ते रु रा च त व रु व ती ॥
॥ अं चि धा पि दे म्मा मे न वा सा र्थं हि म पि मे व न न्मं त र मे ड व म पि व ल ती ति ॥ त र्हि सा ची वा न व र रः का र्क नि ये द न स्य ॥ इ ति प रि आ म ति ॥ त तः प्र वि रा ति हि ॥
॥ म ना मे ना प रि च तः प रि ज न भ्य ॥ १८ ॥ दे वि रु न्या पि त्त्वे र व उ रु मे धि ना म धि रु त र दुः स मा व रु ति ॥ अ स्मा रु ना हं अ र ण मि वे च गो री प रि ण म यो ॥
॥ गं द शो प्र ति प ध ते ॥ त था हि ॥ आ भो ग शा सि रु व रु म्भ ह मा प ता ए वा व र्णो व का रा म पि रो ध ति ले नि रु द्धं ॥ अ प्य स्ति ना स्ति च सं वि ध ये व ह मे त ॥
॥ चि स मु ह्मा स ति ना च म रो म रे ण ॥ १९ ॥ मे ना ॥ ज ह अ ज्ञे ज तो आ ण वे दि त ह पि वा ह मे ग हं जो ग्मा ले पु त्ता ॥ २० ॥ दे वि अ न्य द पि रु प तो ॥
॥ रु च मु ग हं प रि ण वं प था प था रु हि मे ति त न्ग पाः ॥ व र चि ता ह त म न स त्ता थ त था का र्क मे ति मे ग रं ॥ २१ ॥ मे ना ॥ म रु पि र ति दि ओ मा र्क दं

॥ अं चि धा पि दे म्मा मे न वा सा र्थं हि म पि मे व न न्मं त र मे ड व म पि व ल ती ति ॥ त र्हि सा ची वा न व र रः का र्क नि ये द न स्य ॥ इ ति प रि आ म ति ॥ त तः प्र वि रा ति हि ॥

[illegible]

[illegible]

॥ स्फिर्तेष्टु पत्रकोनितचष्टा यथा ॥ सेनामयेनरेण नान्येन तारको निहंत्यः ॥ तदुत्पादने चापमप्युपायः ॥ हेमवते रुद्रभुते राशौ रुद्रा मणितपः ॥
॥ सनुते ॥ पत्नेन येन येन चिदस्तु प्रणयीत पार्श्वतो ॥ ४ ॥ ततस्तपो रात्मसेमयेन सेनायाः कृपारेण ये मनो रथसिद्धिर्भविष्यतीति ॥ महें ॥ तत्प्रथं ॥
॥ गिरिजा गिरिशेन परितो हते ॥ रुद्राणां तदुत्पन्नः कृमारः पूरयिष्यति नो मनो रथं ॥ ५ ॥ न ही श्वराणां व्याहृतयो व्यभिचरेति ॥ महें ॥ सस्मरन् ॥
॥ सहर्षं च ॥ विरंचसमादिष्टमस्मत्प्राप्य मय्येगं कुरुनी वपितुर्निदेशेन सपरिजना पार्श्वतीदिव तदिदमेव समागत्य भगवतमिदुशेषं परिचरताति ॥
॥ रंभा मुत्पादश्रोषे ॥ ६ ॥ वधेयं सिद्धं नः समीक्षितं ॥ महें ॥ क्रमेणावता ॥ मुषैरप्सरसां विहास लक्षितैर्वा येर्मनोहारिभिः कृत्वा तस्त्वलिते ॥
॥ एषां गच्छति तैरेवित स्तुतैः ॥ गहोः स्वस्त्युचोत्तरीयधट्टा मेजुक्रण न्नेभ्यो र्वापो र्त्तपको जिकार पदवी न प्रापितः सेवमा ॥ ५ ॥ तस्य पु ॥
॥ न रक्षितनी पमन पित्रा नेदले दत्तमना दिन च न मने जने मगुण प्रपमा त्या न मया सेन चक्षुषा साक्षात् कृतः समुपसंहृतो विहृतैत कृतना ॥
॥ विकल्पस्य त्वेन कर्तुं श्रुता च एतौ र्भगवत भवेदमोहेः प्रपदशी रुद्रां गौरी परिचरन् ॥ ७ ॥ मध्वज्जन न्यपु वतिसा मात्ममेवतो न मये ॥
॥ था ॥ पतः ॥ आशे च न कृतनु श्रीरंतः रुद्राण्यकिमपि सेवनने ॥ सात्वतु गिरित जलुता सेमोहन मस्त्रमेव पुष्पेयोः ॥ ८ ॥ म० सहर्षं ॥ पुष्पे ॥
॥ श्रित्युको दद्याते न स्मारितो स्मि ॥ सप्रवतको गिरिजा गिरिशयो र्धटने पटीका विति ॥ ९ ॥ सहर्षं ॥ त्रैलोक्यशालने दक्षाता वशी मति ॥
॥ जित्वा ॥ शोतिर्गोष्टिर्गं कर्तुं शक्ता नः केवले मतिः ॥ १० ॥ बल्लो मदीयादि पुष्टि रिकां वितर्क पदशी नावतीर्णा ॥ तद्विलेपित मेव समाहूयतो आमः ॥
॥ महें ॥ मेऽपक्षे विहोमः ॥ रुद्रो वयोः ॥ प्रविश्य न देवनेदी ॥ ११ ॥ त्यापि न्यमस्मि ॥ म० ॥ देवनेदि नाहूयतो हृदिति आमः ॥ देवनेंत र्थेति निष्क्रां ॥
॥ तः ॥ ततः प्रविशति रति रसेता म्नां सह कामः ॥ १२ ॥ सत्वे रसेत द्विमक्रो देस्वामी महेंद्रः समाहूयति ॥ वसंतः ॥ पुंमये ॥ आद्रपरा भजतुषी रु ॥
॥ तपा कृपा चिदावक्षतेष महिमान वशेन भूतः ॥ सेमोहने न भवतः कृतसा पक्षे न तस्या विधातु मधिगंधति चित्त मेदः ॥ १३ ॥ कामः ॥ ६ ॥ वस्तस्य ॥
॥ सर्वे ल्या ल्या मरुत्पु पलयेति ॥ म० विहोमः ॥ सहर्षं ॥ मुखरमधुपामाहा राहमौर्वी तना यं विमुचन जय को ग्ये चाप मे से दानः ॥ मुख

[illegible]

॥ शिवे च नमः ॥ ना० ॥ तदनुप्रसूयितस्वशक्तिनो भान्तो च नादुज्ज्वलमेव ज्ञानावली जगत्सोमा सहातसं द्युक्ता ज्ञानो वक्तिः ॥ महेंद्रः ॥
॥ सविधे दंष्ट्रिमतः परनिषेधते ॥ ना० तेन पुरे नैवनेन मदनः पुत्रो ज्ञातां नीता ॥ म० मूर्धति ॥ ना० समाश्वासयति ॥ महेंद्रः ॥ आश्वास्य ॥ मुमुक्षुः ॥
॥ मणीष पुष्पगण सज्जल जना नैवने पुरे दत्त्वा र्थे त्यक्त जीपितो सि ॥ २० ॥ मधुवन्मा विषाद मयित यता वली पसीत नो ॥ रतिः श्रुतं वती ॥ ना० रति ॥
॥ रपिमो हं प्राप्ता ॥ म० श्रुतं वाच्य संतः ॥ ना० मोहं प्राप्ताः सत्वा वसंतो वि ॥ म० मूर्धितो रति वसंतो विमनुति यतो ॥ ना० ज्ञानमाश्चस्तेन मधुना ॥
॥ अथं अथं चित्ते संतं मिता रतिः पुरतः ॥ ॥ पुरुष पवनवशी र्वमाण कां शुपटं भसितं मधु पुरुषा रुति पत्यु रंग मा विंज्य ॥ गुरुतर शो क्रो प्रहता रु ॥
॥ रती वज्रिमा विपोग मापना ॥ ना० दं दार्ता नां दं वाच्य त्वपितो नतस्तनी वा ॥ २१ ॥ म० ततस्ततः ॥ ना० ॥ तदनुज्ञा ना येति पुरुषित वंती रतिमा ॥
॥ शो सपदा शो जाला ॥ पथा ॥ मुंच शो अमपि आ मय हस्तं मे सं धिते जगति जेन क्रुत्य ना ॥ ॥ द्विष्यति पुनश्च ते पति वार्जनी परिणये विना भिनः ॥ इति ॥
॥ ॥ म० समाश्वास्य सत्त्वमिव ॥ मने मनो रथो मे पुनरं कु रितुं क्रिया पमुपेत्ते ॥ ना० गिती ॥ शेषस्तद्विधा रथ परेण संसितः ॥ ११ ॥ २५० ॥
॥ मधुवन्सत्त्वैव जेन पसीयाणा ॥ सर्वथा आमः पुनरुद्र विष्यति ॥ म० ततस्ततः ॥ ना० अथं चित्प्रत्वा श्वस्तारति नीता सा समा नदः विनमधुना निजे ॥
॥ मयनं ॥ म० आमं अथा वशेषं रुली जालं दंष्ट्रि मयुते ॥ ना० रती सन्निधु र्वे परिजिहार्थं वा सत्त्वत गणेन भूते पति रतं धीन मयुते ॥ म० श्रुत ॥
॥ तवती वा वती ॥ ना० ॥ नाग त्वपो म्मां ना पमूर्धं मुकुलिते सणा ॥ ना० ना नितां तजात्स त्या जोटी हिमवता गृहं ॥ २२ ॥ म० भगवन्ना रदं भुतं श्रोत ॥
॥ अंष्ट्रिमतः परं प्रतिपद्यते ॥ ना० पुनरिमं यत्तां तस्य लो कं वार्तने यतु र्मुखा वनि वेदपि तुं गमिष्या माति निष्कांतः ॥ ततः अपिशति रंभा ॥ रंभा ॥ २३ ॥
॥ रमं अणा दोणि वदमाणा पुत्रो स हिष्य त्थल अरे जो म० ओ अस्ति ओ र्त्तं तो तं सा मिणे पिस्सु वेम ॥ इति परिआ मति ॥ महेंद्रः ॥ पितो म० सेयी ॥
॥ रिणी ववहती पिप्रहति जेव चापलो मुक्ता ॥ मोहन क्रुते वमती आस्ति दधं क्रमुल पुत्रा सी ॥ २४ ॥ निरूप्य रंभा स्व त्विषं ॥ रंभा ० ० ० पस्त ॥ ॥
॥ जेदु जेदु मद्या ॥ म० रंभे कुते नाग मते मयत्वा ॥ रंभा ॥ ॥ अरे रमं अणा दो ॥ ॥ महेंद्रः ॥ श्रिमस्तित आ वर्यो यत्तांतः ॥ रंभा ॥ ॥ रंभा ॥ जो हि दस्साणि दिवा ॥
॥ ॥ गि जाल जालेण अहान्ते सेसि ओ आ मोत्ति सद्यो मला ॥ ॥ अला धां वि ओ स हिष्य त्थल अरे ॥ म० श्रुतं दयत् ॥ रंभा ॥ ॥ वम्म हं दहेण मया ॥

[illegible]

॥ कामः सात्म्यज्ञानास्वामिना योपप्राणान्म्रियतमानपि ॥ पशः शरीरममहं हभंते सुनुषेगिनः ॥ १६ ॥ तद्यथादिष्टं स्वाभिना तथाश्रयिष्यामि ॥ महेंद्रः ॥
 ॥ २ ॥ हृत्पतिभ्यः हस्तमुधम् ॥ अस्तु स्वस्त्वय नंत पाधमरुतो सत्याशिषामाशिषस्त्यं रक्षंतु पशयंते सुपिपुल्लो न्रं येदा यतु ॥ शोर्वत्पुत्रकोरिदं च ॥
 ॥ अजतात्पुंसां पुंशोऽपि चोद्योगमिमं समर्थं वतु नः स्वर्द्धं चोद्योचिः ॥ १७ ॥ आ० रतिवसेता ॥ संहशं नानिष्कृतः ॥ महेंद्रः ॥ गुरोपिदं पादेशा ॥
 ॥ ३ ॥ दत्तु रूपमस्वामिरेव तावदनुष्ठितं ॥ आर्षसिद्धौ भगवती नपतिरेव प्रभवति ॥ ४ ॥ आ० मपि प्रस्तुतं आर्षसिद्धये नृपदेवतायाः ॥ आर्षपितुं गमिष्यामी ॥
 ॥ ति ॥ ॥ ५ ॥ इति निष्क्रान्ताः सर्वे कार्यती परिणयेद्वितीयांशः ॥ ॥ ततः प्रविशति महेंद्रो ॥ हृत्पतिश्च ॥ महेंद्रः ॥ गुरोपि न्नामभासः ॥ केनापि पाण संधाने ॥
 ॥ नखेऽपश्यं वशीकृती ताहोसितं वत्तं समपदिनं श्रुत्वा ॥ ६ ॥ मुनिमांसितुमशक्तं वत्तं येत्तं ॥ अथ यो यो पां यथा रितं येत सात्मानं ॥ अवनम्य पावश्र ॥
 ॥ स्पुष्टोऽपरातो नीयेत ॥ अथं मपिष्यातीति न जाने ॥ ॥ कामास्मिन्नेतत्तु चमिता ॥ साश्रुं ॥ अदक्षिणमिदं च सुः स्फुरितैः शंखी यमे ॥ देव आर्षपि ॥
 ॥ धातावजायतो कामतोपि चैः ॥ १ ॥ ॥ ८ ॥ प्रतिहृतममेगलं रमध्वनने नानिमित्तेन साप्यते ॥ यतोत ज्ञेन ज्ञेन चिदांत व्यमिति ॥ ॥ ततः प्रविशति नार ॥
 ॥ ९ ॥ नारदः ॥ मध्वदोदेशेन स्थाप्यो अभंगत्वा तत्र त्वमुदंतं विज्ञापयमागतोऽस्मि ॥ तदेनमुपस्थपनिवेदयिष्यामि ॥ त्वमस्मिन्नेतत्तु चमिता ॥
 ॥ कामति ॥ महेंद्रः ॥ पितोऽयं ॥ अपमेव महती वदहो मुनिरुपसर्पति ॥ ततः सनमुपनीयतो ॥ ८ ॥ आसनमुपनयति ॥ नारदः ॥ ॥ प्रविशति ॥ महेंद्रः ॥
 ॥ अंजलिं च ॥ भगवन्कृपयममममं आदिपुष्यं मभिलषितं ॥ ना० सर्वमादितः प्रभृतिं यथापि श्रूयतां ॥ म० ॥ अंजलिं तोस्मि ॥ ना० ॥ तथा देवा ॥
 ॥ आर्षाय प्रस्थितं नंदं पतिस्फुरिष्यापि च पातत्र त्वत्तं तजिहो सपात्तन्निदेशादं च चरे ॥ म० ततस्ततः ॥ ना० ॥ तत्र स्थाप्यो अभसमीपमा ॥
 ॥ सा च कामो वसेत मभिलषितान् ॥ म० ॥ अथ मिति ॥ ना० ॥ सखे त्वया स्मिन्नेतत्तु चमिता ॥ म० ॥ सखिं रुतशर ॥ नारदः ॥ ॥
 ॥ यथा हतपन्थ कृत्वा निवनप्रियाणं ॥ अहोऽयं न्यत्र यमाकृतं नंदं जानि ॥ सत्यः प्रस्तुतं पिशितं त्वमुज्जोलेवं सेवर्द्धं न्यधुर्दृष्टं भते नान्नेष ॥ २ ॥
 ॥ म० ततः ॥ २ ॥ ना० ॥ दत्ते प्रियाभिर्दूमानं सर्वे कामाचरता सवमन्यपुष्टः ॥ आमोदिभिः वं चमतागमेदैः ॥ आशोधय वं च शरावहेवं ॥ ३ ॥ महेंद्रः

॥ श्री लक्ष्मणं कुरुं स्मितवती प्राप्ते वरुणांतरं नवीत लुप्यते तसि मम प्रादुर्भवत्पंजरा ॥ १ ॥ तदिदं नीमे वगाउतरत रणिभिरण परिहोता भिवमेदिनी ॥
 ॥ मेघः कृत्स्नतपो विशेषतस्तमः पुपवत्स्य ॥ वयेवं जपापि जपाभ्यो निवेदिता भावयं धस्तस्मानेदिनामस्य मर्षितस्तदेवात्मानमपते कर्तुमिवावधार ॥
 ॥ यामि ॥ इति सविनयं परिक्रमति ॥ ततः प्रविशति जपापि जपाभ्यो मन्त्रात्मना तपस्येती पार्वती ॥ यामासि स्येदं नैव ययि ॥ हला लही ओ ॥
 ॥ आनेदं हसि सिसिं अकारं पुरंदरं अं पामं ॥ महं दमादणी पुजा अदृष्टो अस्मि अज्जिं सु पूजे ॥ ८ ॥ जपा ॥ हला पध दृष्टि आं पाम सिसि च ॥
 ॥ ए पु रि सां द रि स्य र रि स च लं स रिं ति प रि ता नि आ भं ति ॥ त ह य म्म ह ता ह रि कृ र्णो वि पर मे स रो कृ त्स वि पु रि णो मु हे ए तु मे अ ए गु मि हू त्स ॥
 ॥ ६ ॥ पार्वती ॥ सधं हो दु पि अ स हा प च अं ॥ शं क रः ॥ पार्वती वि लो म ॥ के दं त पः कृ दो रं के दं सु कृ मा त्मे ग म व हा पाः ॥ ६ ॥ व लः कृ व ध नो क्मा कृ व ध म ॥
 ॥ हो मो म ना चं ॥ ८ ॥ अ हो म ह त पः हो श म नु भ र्ति मा पु दि १ प मं नु भा धि री ॥ जपा ॥ वि लो म ॥ ह ला प ध दृ ग ह द न ए वि अ पु ५ म स्त जो नु भा क्ति वि ॥
 ॥ म हा पु रि सो द हो मु हो आ अ दृ ॥ पार्वती ॥ आ अ नं नं नं दि ही एं तु मे हिं अ ध र्ण का द धा ॥ अ हं र्ण ज ह पु धं रि अ मे अ ए गु वि हू मि ति मो न मू व ले ॥
 ॥ व ते ॥ शं क रः ॥ वि र्ण ॥ आ भा ति व ह ले व ती पां दु क्षा मा म दा व पि र हे ए ॥ अ ति प कृ ले व चो दी संधा श कृ ते न सं वी ता ॥ ९ ॥ इ ति स मा प पु प स र्प ति ॥
 ॥ ज पा पि ज ये ॥ वि ष्ट मु प न व तः ॥ शं क रः ॥ ६ ॥ वि श्व मा र्ग र्णे दं ना द प ति ॥ पार्वती ॥ स र्पे वि लो कृ प ति ॥ स र्पे ॥ व र्णि ने ता ल चं ते न वी ज व तः ॥ शं क ॥
 ॥ रः ॥ ह स्त मु ध म्पा ग तः अ कोः स्मा कृ म न म्सा मा न्ये न भ व ती नां लो ज न्ये न ॥ ७ ॥ स वि न यं ॥ कृ दो आ अ दृ म हा पु रि सो ॥ शं क रः ॥ अ च क्रे ना सा ॥
 ॥ ग म्प ते ॥ ज पा ॥ ज दृ धं अ ग्धं प रि गृ हा दु म हा पु रि सो ॥ शं मुः ॥ त थै न्य ध्म अ ति म हं कृ प पि ता ॥ म दे १ अं अ ष्ट म धि त था मो भ व त्यो ॥ ज पा ॥ पु ॥
 ॥ द दु म हा पु रि सो ॥ शं मुः ॥ कृ त्ये वं दु ह ता के भ व त्यो अ नि मि ते अ कृ दो रं त प सि व र्त्त ते ॥ ज पा ॥ ए ता ए वि अं सी हि म अं त स्त कृ त्ता प ध ॥
 ॥ ए म हे आ अ ने पि से पि अ ल ही ओ ज आ पि ज १ अ ए गु कृ व र हा ह रि मि ते च ले त व ध रं ॥ शं मुः ॥ ज न्मा न्य धा वे अ थ म स्य चा तुः ॥
 ॥ पि ता ग री पा न रि रि सा र्च भो मः ॥ व पु र्म नो ह रि व च श्व र म्प व दं च हो का द ति हो कृ म स्याः ॥ ११ ॥ त त्ति म न पा क र्थ नी पो व र स्त्रि जो यो ॥ ॥

॥ ज पा अ ति पि को पि म हा पु रि सो ॥ शं मुः ॥ जो वा सा वा त्म लो मा ग पि शे ष दु र्दि द ग्धः कृ त्स्न ह द वः ॥ ज पा ॥ म हा पु रि स लु णा हि ता अ ॥ जे भि त्त म ए ति वे ॥
 ॥ ति प रि ता ॥ तं पु ध व र मे स रं अ हि व हं ती एा पि अ ल ही त को रि अ मे अ ए गु वि हू ॥ शं मुः ॥ पार्वती अ ति म दे अ वि स त्प मे त र ॥ पार्वती ॥ मो न मु न्मु अ ॥
 ॥ म हा पु रि स ज ह आ अ रि स दं स हा हिं त ह मे म एा र हे ॥ शं मुः ॥ आ त्म ग ते ॥ इ ता नी मा त्म नि दं नै र पि अ व चा वि चि त्त म स्याः व री सि ष्ये ॥ अ का शे ॥ स ह स्त ॥
 ॥ ता वं अ ह स्य ॥ ॥ आ हो वो भ सि ते वि भू ष ण म हि री तः पि तृ णं व ने वे ता नाः प रि चार काः अ ति दि न्य नि भ्ये पि क्षा म यी ॥ इ त्यं य स्य शु भे त रि णि च रि ता न्वा त्ये ॥
 ॥ ति ल र्ज ज ना ल्पि मी ग्ध व शा न्ति स्त व रु चिं च आ ति धिं कृ म हे ॥ १२ ॥ अ म धु ॥ ज ग त्प्र वी हो चे न ग ले चं दि का कृ त्स्न र्प र्ण भ व ती कृ म च तः ॥ कृ र्ण ॥
 ॥ ति भा लाः पि तृ आ ने व ल न्मे ग ला चार ति लि चो च नः ॥ १३ ॥ पार्वती ॥ कृ र्णो पि धा पा ॥ सं तं पा वे र ॥ शं मुः ॥ व धे वं ते म न सि दृ ष त रो नि भ्य वः ॥
 ॥ वि धं तु दं चो द म सी प रि क्षा म प ते कृ ता ॥ व र्ण एा ष्य ता द्र व ती सं प्र त्ये व पि ना भि न ॥ १४ ॥ कां मु ल्ये व ए र्णै रू प पि ता ॥ जं लु कृ धं ति रि अ मा स अ ॥
 ॥ हा पि मो ति एा ए म धा रं ॥ त ग रि सं र्णं दं नं अि ए तु ह जि हा ए हा इ रि ष्य म्सा ॥ १५ ॥ ह ला कृ म हा पु रि स रिं ता आ वि रं ता रि सं पा वं जा रि से लु णे ॥
 ॥ ता रं ॥ ए ल र्ण न मृ णो ई व र रिं ता रि रं कृ ल मु हो ता अ स दो ओ स ता मे ॥ इ ति वि स्ये स मा न व ह्य ले म न्य तः प त व र्त्त ते ॥ शं मुः ॥ स्य रू पं अ का श य ॥
 ॥ प रि णा हि स्त न पु ग हे कृ श म व ह्म नं स मे त रिं ग रि जे ॥ त व ह स्त दा न च तृ त्त प सा हि रू तो व म स्मि द म्म ज नः ॥ १६ ॥ इ ति पार्वती ह स्त म व र्त्तं व ते ॥
 ॥ कां स भ व पि स्म य अ ह र्ण ॥ पु ल भि त्त त नुः अ स्ति न गे दी अ ति प ति मू ण ति ष ति ॥ ज पा ॥ वि अं रं ॥ स सि हि दो प र मे स रो अ कृ रं स कृ म्म प रि णा ॥
 ॥ मे ण ॥ शं मुः ॥ आ पिः अ मां पु र्णि का म ग ल तां गा ढ मे कृ त्स्न व को ॥ आ मं डि त प वो ध रं मा विं ग्प रु ती भ वा म्म ह रि रि जे ॥ १७ ॥ त दि मो गं व र्ण ॥
 ॥ वि वा हे न पा णो कृ र्ण म मि त था मि ॥ ज पा ॥ म अ वं अ म्हा रं प त्प र्ण तु १ का द धा ॥ ज ह स अ व कृ ला च व च कृ व दि एा ता द स हि म अं द स ध रं ति ॥
 ॥ अ म्म अ पि ना ह कृ ज्जो वं चा तु मे प रि द ॥ शं मुः ॥ स वि र्णं दं मा त्म ग ते ॥ र तः व रं कृ प मि मो व र्त्त ष्ये ॥ अ का शे ॥ भ व ते लो कृ वा ची न हा त म्सा ॥ ज पा ॥ वं च ॥
 ॥ दि अ त मे त रं ज ह पि ना ह मं ग ले भ पि स्त रि त ह कृ ती अ दु ॥ शं मुः ॥ वि च तु दि र सा म्पे त र इ ति व कृ यं ॥ त था हि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ स्तनमपि पिरहे मम प्रिया वाः ॥ अत्र पतिः कृत्स्नः स ह्यस्य कोटि सा म्ये ॥ कृति पपदि स प्रयोगे नें कृत्स्नमिव हंत स हि विद्यते म नो मे ॥ १८ ॥ इति पार्श्वे हस्तो मे ॥
॥ चति ॥ ज वा ॥ अत्र मद्यमो पि आह मे ग ले सं या दे दु ॥ शं भुः ॥ तथा विपतो ॥ व प म वि स न वी वि वा ह मे ग हा व जे व वि तु ग मि ष्या मि ॥ ॥ इति निष्क्रो ॥
॥ ताः सर्वे पार्श्वे ती प रि ए ये च तु यो भः ॥ ॥ ततः प्र पि श ति कं उ की ॥ २ ॥ आ शो तो स्मि स कं उ की च ले च कृत्स्नो ना हि म व तो ॥ व था ॥ शि ला ध र ॥ प र ॥ पु र ॥
॥ दे व प र मे श व र प्र हि ताः सा हं व ती श्रीः स त र्थ वः स मा ग त्प त ॥ च व त वा दि न मि दं पि वा ह मे ग ले को ष्म म कृत्स्न प र ॥ त द्र व तो ॥ यो ष धी प्र स्य ज सि नः पो राः पु रं ॥
॥ प रि ॥ स्त्रि प ता मि ति नि यो क्त वा इ ति ॥ त त्र भो र्नि यो ग म नु ति ष्या मि ॥ इ ति प रि कृत्स्न स र्व तो व हो म ॥ भो भोः पो राः ॥ सं न सं तो पि चि वाः प्र ति भ व न मि ह ॥
॥ भू ए प स्तो र ए ना मु न्ने म्यं तो स मे तो ह ग न त ह वि हः के त ना नो प ता भाः ॥ सं ति ॥ ये तो प टी द्र व भ रि त ज ले री य वा मु क्त पु ष्याः सं ज्ञा तो सा मु वा वाः प रि ॥
॥ ए वा दि वे सा पि श्व मे ग ॥ य हे तुः ॥ १ ॥ आ भा शे ॥ क्रि भू थ ॥ भ ग व द् व ना त्रा मे व स र्व म स्मा मि हि गु ए मा च रि त मि ति ॥ स र्व तो नि र्ग र्ग स ह र्थ ॥ आ हो आ स्म न ॥
॥ दे शा त्रा मे व ज र त्ते म हो त्स्व वं न ग रे ॥ तथा हि ॥ पु षा चं द न मा लि का पि र चि ता च त ज वा ह नै र्जै रं भा स्ते भ प रि स्तु ते भु व न द्वा रे भु सं ले क्ष ये ते ॥ आ मे ॥
॥ द्र व ति पः ॥ अ ए ति मुर ज्ञा मूर्ध ति ते नी र वाः सं ज्ञा नै र्म हा भू ष ले स्त त इ तो ॥ च त्प ति वा तं ग नाः ॥ २ ॥ इ त श्च ॥ इ त्स्व र्ग ग र च धृ प प रं प रा मिः प्रा दु र्भ व ॥
॥ त्प मि न रो जे व ना ग मो वे ॥ ६ ॥ कृ तो म र म हा प्र भ वा स्फु रं स्ता सं ज्ञा व ते च श त स म्पु रा त त न श्रीः ॥ ३ ॥ अ न्य त श्च आ मः ॥ च व ला रु ए मे व भू र को ॥
॥ गे र पि त मा र च ये ति त ग व हं ती ॥ कृ च यो र्गु ग ते नै र्ग र्ग कुं भा पु न ह त्ता नि य कृ र्त्ते म ग र्ग वः ॥ ४ ॥ स र्व तो व हो म ॥ पि सि तः स र भ स म व पो र तो भै र्वि ॥
॥ स्फूर्ज त्कु न र जः पि रो ग दी प तिः ॥ प्र न्य म धु म हा म कृ त्वा ज ह शो भा मा च त्ते दि शि दि शि को कु मः प रा गः ॥ ५ ॥ त दि हं प्र व र्त्त मा नं पु र प रि ष्का रं प्र भ ॥
॥ वे नि वे द वा मि ॥ ततः प्र पि श ति चि द्भु क्त स्था न म धि व स न हि म वा न ॥ २ ॥ कृ र्त्ते ना र द स्त च ने न म हा ता चं द र्थ च ज म हा जी मा ते त्प भ व त्पु न स्त द नु त त्ते ॥
॥ प्रा पि रा को स्ति ता ॥ त ॥ व्या सो त म सो म वा दि न मि दं त स्था श्व वे र ग हि र्जं ज्ञा ते पि भ्र ग हा न ती त्प कृ ति ना म वा ह मे न स रः ॥ ६ ॥ शि ला ध रः ॥ प र ॥ पु र ॥
॥ जे प तु र स्मा मी ॥ हि मा ले वः ॥ शि ला ध र ॥ पु र प रि ष्का रः प्र व र्त्त तो भ व तो ॥ शि ला ० स्वा मि न्स्म दी को व मु त्ति व इ ति प्र त्प र्ग पो रा ए म मि मा ॥
॥ नः ॥ भू थं व रि हा ये ते पु र प रि ष्का रः ॥ स र्वं ह गु ए मा च रि तं पो रेः ॥ ह म ० शि ला ध र ॥ स र्वं प र्व ताः पार्श्वे ती प रि न ह मे ग ले द्र व मा ग ताः ॥ शि ला ध रः ॥

॥ नंदीगणपिस्तथा ॥ भद्रं भवतीम्यो ॥ जयापिजयेगमन्नयं वंदामो ॥ नंदीगणपुत्रोऽस्मिन्निमित्तं गपुष्पावचयं माचरयतां मेतां नृहेतिमवेद ॥
 ॥ स्तुतुस्तु ॥ गेरीपुत्रिस्तुहीओतवधरणिअमहिआ ॥ पुतापुत्रदेवअरुआपुष्पा ॥ अअश्चिरामो ॥ नंदी ॥ निमित्तं गतपस्तथा ॥ जया ॥
 ॥ अणुस्तुअं वरं तं हं अंति ॥ नंदीओसापुत्रुको वरः ॥ जया ॥ जंजितुभरणितिवेआ ॥ सिधजुआणं पुताणपुरितं च ॥ जोजिवआरुदशिधं ईसरस ॥
 ॥ दंअनंदहेतुं च ॥ ३ ॥ एसाणोपिअसहीतं एधपटमेसरं वदंअहिजसेतीमहिदं पमुहेतोअपावेअअमहिअतवधरणेअरेद ॥ अच ॥ ४ ॥
 ॥ स्तुतुस्तु ॥ वदतपोपिपुणोधरं पयसिअवहं अंजं हं आसी ॥ नंदी ॥ तत्कथमुच्यतां ॥ जया ॥ वंदुस्तुमसरीरं भुजितुमंतवअणुतरलीरुता ॥ ५ ॥
 ॥ सीणपधकातिणपमुवदणोपिदहगिहेण ॥ ६ ॥ नंदी ॥ ततः अथमासी हांजिपसजी ॥ जया ॥ अणे वरं सुणु ॥ चंअं आरुदचंदणदिपअणुपुसंण ॥
 ॥ संमस्तु ॥ एतजं वहतअरुपिदं एतहपचं अं पेणोदद ॥ एताओमपहासिणामिअथणप्यापारमएवमएसाणीहारसिताअहेसुणु वरं ताया ॥
 ॥ दुतावद ॥ ५ ॥ नंदी ॥ एवंप्रवहज्वरासापभ्यालिंरुतवती ॥ ७ ॥ पदाअं पिउकाअं अंदरणं तीतवधरणेहिपरमेसरंअहिमुहाआडुं पतिता ॥ तह ॥
 ॥ तिधणिअमं अरेद ॥ नंदी ॥ तल्लिमनेनसेदिधअलेन दुर्लभमार्थनानि वंअेन ॥ देवेप्येवं अं चिदनुकूपं वरं रणी पतो ॥ अयंपुनः एवंपरशुसन ॥
 ॥ एतारेवजीतताणं ॥ तदुहिमुपदिशतां भवंत्यौ सत्यौ ॥ जया ॥ भअं वं एदंअलाणं विअतहीपुववासदं ॥ जहपरमेसरं एधपदं नहेओ ॥ अस्तुता ॥
 ॥ अत्थएधसिहरेअहिलोहितवधरणेहिं पिजीणभवेअं ॥ नंदी ॥ आत्मगतं ॥ अतंओतयेतमिमं यतांतं नीजलोहितापनिवेदयापि ॥ अजारी ॥ भ ॥
 ॥ देवभागतंगमिष्यामातिनिष्कृतः ॥ जया ॥ अलेपिअसहीपुतापुष्पा ॥ एवतामो ॥ ॥ इतिनिष्कृतेमिअपिष्कोभरः ॥ ॥ ततः प्रविशतिने ॥
 ॥ अिभूमिआवचंरीशंकरः ॥ आत्मानं निर्वण ॥ पर्यासेवेभूमिआचार्यतीप्रतीरपितुं ॥ तथाहि ॥ ॥ अं लेखुह्याजिनश्रीः विगुणपिदचित्ता ॥
 ॥ मेसुताओणिभागेपाणाकावाठदंओभसितविरचितं पुद्रुं भावदेरो ॥ ६ ॥ र्मैः स्तितं पवित्रं अवरणितपरिणमन्मानतुंगीपिशंगीमोयोपंक्तिर्जटां
 ॥ जपवतपमिदं स्फुटिं चंअओवे ॥ ८ ॥ पितृं त्य ॥ वत्साममयमोहनात्तमपेसापत्रपाचाहणापकेणुस्मितप्रहृष्टगंडकृत्तं श्रीगविहोलेसणु ॥

